आधुनिक काव्य-लोक

सम्पादक
डॉ० विधान चन्द्र राय
असोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
जवाहरलाल नेहरू शासकीय महाविद्यालय
पासीघाट (अरुणाचल प्रदेश)

आर्यभाषा संस्थान, वाराणसी

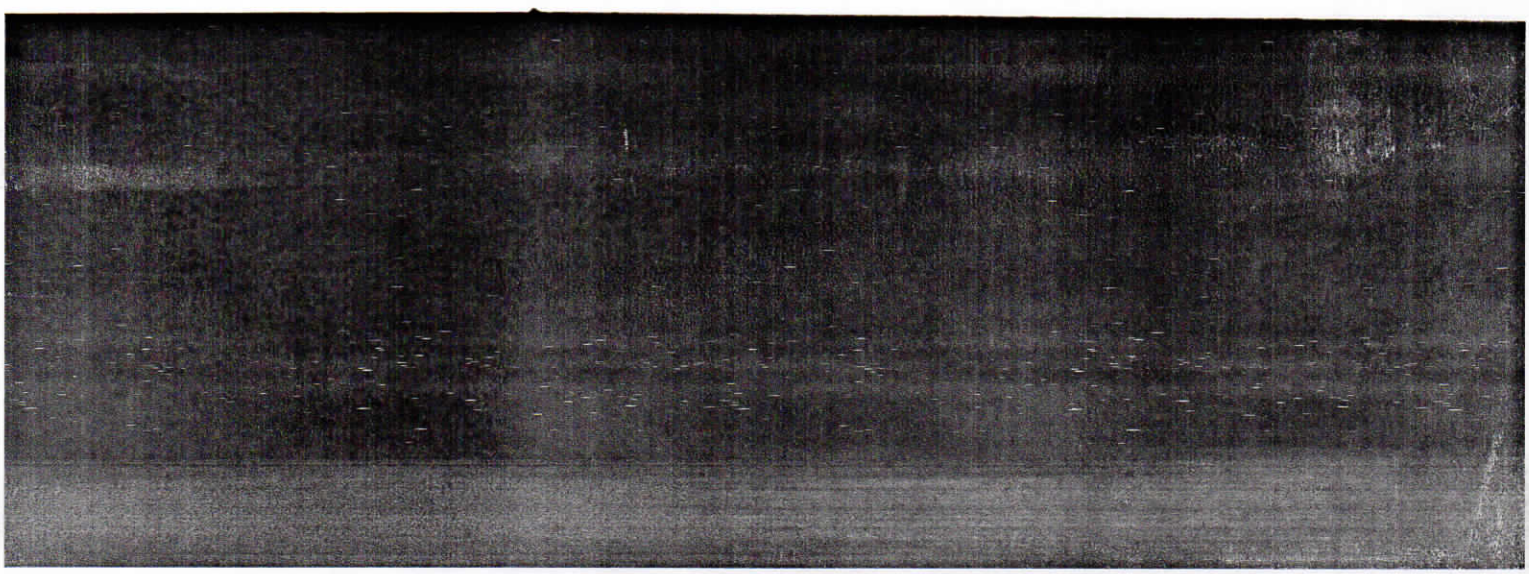

प्रथम दी ग्लोब संस्करण : 2004, कुल 500 प्रतियाँ
संशोधित संस्थान संस्करण : 2010, कुल 500 प्रतियाँ
पुनर्मुद्रण : 2012, कुल 500 प्रतियाँ
पुनर्मुद्रण : 2016, कुल 1000 प्रतियाँ

ISBN : 978-81-87978-25-1

मूल्य : ₹60 (रु० साठ मात्र)

प्रकाशक : आर्यभाषा संस्थान, बी 2/143ए भदैनी, वाराणसी-221001/
© सम्पादक / अक्षर संयोजन : **आर.के. कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स,** वाराणसी/
मुद्रक : **दी महावीर प्रेस,** भेलूपुर, वाराणसी-221010 ।

ADHUNIK KAVYA-LOK, Editor : VIDHAN CHANDRA RAI

आधुनिक काव्य : एक परिचय

आधुनिक काव्य-प्रवाह के प्रस्थान बिन्दु के रूप में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को माना जाता है। इस बिन्दु से देखा जा सकता है कि मध्यकाल की जड़ता से साहित्य मुक्त होने लगा है और वह नए जीवन दृष्टिकोण का आधार ले रहा है। घोर शृंगारिकता और चमत्कार-प्रियता से मुक्ति हो रही है। नायक-नायिका वर्णन गौण हो रहा है। डॉ० बच्चन सिंह के शब्दों में, "आधुनिक युग की पीठिका के रूप में इस देश में जिन दार्शनिकों और धार्मिक व्याख्याताओं का आविर्भाव हुआ उनकी मूल चिंता धारा इहलौकिक थी। सुधार-परिष्कार, अतीत का पुनराख्यान नवीन दृष्टिकोण का फल है। आधुनिक युग की ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है कि साहित्य की भाषा ही बदल गई–ब्रजभाषा की जगह खड़ी बोली ने ली।" इस प्रकार खड़ी बोली आधुनिक युग की एक पहचान के रूप में मान्य हुई। भारतेन्दु ने कहा–

निजभाषा उन्नति आहै सब उन्नति को मूल,
निजभाषा उन्नति बिना मिटै न हिय को शूल।

निज भाषा-उन्नति का मंत्र आधुनिक युग का सूत्र है। यह सूत्र अंग्रेजी शासन और भारतीय जनता के बीच पनपे संघर्ष से प्राप्त हुआ है। खड़ी बोली इस संघर्ष के बीच विकसित होती है। आधुनिक युग की पीठिका भी इसी संघर्ष से तैयार होती है। इसी संघर्ष के बीच भारत की खोज शुरू होती है। भारतेन्दु मंडल भारत के गौरवपूर्ण इतिहास और लोक जीवन को एक साथ अपने अध्ययन का विषय बनाता है। कविता में लोकशैली को स्वीकारा जाता है। फारसी-उर्दू के छंदों का प्रयोग किया जाता है। पारम्परिक प्रचलित छंदों में भी रचना का क्रम आगे बढ़ता है।

काल विभाजन : कुछ बातें

आधुनिक काल का विभाजन हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों ने कुल आठ खंडों में किया है। भारतेन्दु युग (१८५० ई० से १९०० ई०), द्विवेदी युग (१९०१ ई० से १९१८ ई०), छायावाद युग (१९१९ ई० से १९३६ ई०), प्रगतिवादी युग (१९३६ ई० से १९४३ ई०), प्रयोगवादी युग (१९४३ ई० से १९५० ई०), नयी कविता युग (१९५० ई० से १९७० ई०), जनवादी युग (१९७१ ई० से १९९० ई०)। १९९१ ई० से उत्तर आधुनिक युग का प्रवेश माना जाता है। आधुनिक काव्य-लोक के कवियों में जयशंकर प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा, पंत छायावादी युग के कवि हैं। अज्ञेय प्रयोगवादी हैं। शमशेर प्रयोग और प्रगति के मिले-जुले रूप हैं। नागार्जुन प्रगतिवादी कविता के प्रतिनिधि कवि हैं। भवानी प्रसाद मिश्र नयी कविता के कवि हैं। मुक्तिबोध भी इसी धारा के हैं। केदारनाथ अग्रवाल की